हम पर्यावरण बचाएँ | By Kumaar Mukesh

हम मानवता के खातिर मिलके कदम बढ़ाते हैं।।
चलो हाथ बटाते हैं।।
इस महाविनाश से हम अपनी धरती को बचाते हैं।।
धरती को बचाते हैं।।
चलो मिलकर कदम बढ़ाएं हम पर्यावरण बचाये।।
चलो मिलकर कदम बढ़ाएं हम पर्यावरण बचाये।।

परमेश्वर की रचना प्यारी ये सुन्दर संसार।
धन्य धन्य हर प्राणी जिनको मिला है यह उपहार।
कहीं पे कल कल बहती नदियां कहीं पे झरने प्यारे।
कहीं पे ऊँचे ऊँचे पर्वत सुन्दर बड़े नज़ारे।
कहीं पे वृक्ष घनेरे देखे लदे फलों से रहते।
कहीं पे फूलों की क्यारी है जिनपे भवरें बैठे।
सूरज चंदा नील गगन ये बादल काले काले।
हैं अनमोल ये तोहफे मानव क्यों ना इन्हें संभाले।
कैसे होगी इनकी रक्षा यही बताते हैं।
हम यही बताते हैं।

इस महाविनाश से हम अपनी धरती को बचाते हैं।।
धरती को बचाते है।।
चलो मिलकर कदम बढ़ाएं हम पर्यावरण बचाये।।
चलो मिलकर कदम बढ़ाएं हम पर्यावरण बचाये।।

वातावरण की हर इक रचना ईश्वर का वरदान।
जिनको तुम निर्जीव समझते हैं उनमें भी जान।
वातावरण को बना दिया है दौलत का व्यापार।
पर्वत के सीने में तुमने घोंप दिए हथियार।
जैसे को तैसा मिलता है वार के बदले वार।
नदियों का रास्ता रोका तो होगा हाहाकार।
जब जब होता है धरती पे कोई अत्याचार।
अपना बदला लेगी प्रकृति सुनले ये संसार।
कुदरत का ये मानव को सन्देश सुनाते हैं।
सन्देश सुनाते हैं।
इस महाविनाश से हम अपनी धरती को बचाते हैं।।
धरती को बचाते हैं।।

चलो मिलकर कदम बढ़ाएं हम पर्यावरण बचाये।।
चलो मिलकर कदम बढ़ाएं हम पर्यावरण बचाये।।

सारी प्राकृतिक घटनाएं ईश्वरीय परिणाम।
लेकिन कुछ घटनाएं मानव जाती का परिणाम।
कहीं पर आया भूकंप तो कहीं पे धरती काँपी।
हुई तबाही ऐसी जिसकी कल्पना हमने ना की।
कहीं पहाड़ गिरे हैं भारी हुआ बड़ा नुकसान।
लेकिन इतने पर भी क्यों न समझे ये इंसान।
आया है तूफ़ान कहीं तो आयी है सुनामी।
कहीं पड़ा है सूखा ऐसा मिट गया दाना पानी।

हम मानवता की सेवा में जीवन को लगाते हैं।
जीवन को लगाते हैं।
इस महाविनाश से हम अपनी धरती को बचाते हैं।।
धरती को बचाते हैं।।

चलो मिलकर कदम बढ़ाएं हम पर्यावरण बचाये।।
चलो मिलकर कदम बढ़ाएं हम पर्यावरण बचाये।।

मानव बन बैठा है दानव निर्दयी अत्याचारी।
इसके दुष्कर्मों से आए आपदा दुख बीमारी।
अपने लालच की खातिर ये हरे भरे वन काटे।
बेच के लकड़ी भरे तिजोरी काले धन को बांटे।
करने को व्यापार पहाड़ों पर ये करे खुदाई।
लेकिन इसने ना देखी वो गहरी गहरी खाई।
टूटे पर्वत और पहाड़ तो नींव हुई कमजोर।
ऐसा तांडव मचा मौत का देख ना पाया भो।
संभलो और संभालो तुमको ये समझाते हैं हां ये समझाते।
हां ये समझाते।
इस महाविनाश से हम अपनी धरती को बचाते हैं।।
धरती को बचाते हैं।।

चलो मिलकर कदम बढ़ाएं हम पर्यावरण बचाये।।
चलो मिलकर कदम बढ़ाएं हम पर्यावरण बचाये।।

दौलत के भूखे मानव ने की है वो मनमानी।
आया है सैलाब बाढ़ का चारों तरफ है पानी।
बह गए गांव के गांव बची ना कोई एक निशानी।
देखो तो इस बाढ़ से ज्यादा है आंखों में पानी।
पशु परिंदे मरे हजारों मिट गई पेड़ की छाया।
कई परिवारों ने अन्न का दाना भी ना खाया।
किसी के सर से उठ गया। देखो मां बाप का साया।
कोई अपनी औलादों को चाहकर बचा ना पाया।
हम सब उन सारी आत्माओं का शोक मनाते हैं।
हां, हम शोक मनाते हैं।
इस महाविनाश से हम अपनी धरती को बचाते हैं।।
धरती को बचाते हैं।।

चलो मिलकर कदम बढ़ाएं हम पर्यावरण बचाये।।
चलो मिलकर कदम बढ़ाएं हम पर्यावरण बचाये।।

मिट गई खेत खलियानों से फसलें वो लहलाती।
खून पसीना हो गया माटी बुझ गए दिया बाती।
कुदरत जब विकराल रूप में अपना रंग दिखाती।
महल दो मैहले शानो शौकत यही धरी रह जाती।
खेला मानव कुदरत से तो होगा ऐसा हाल।
कुदरत अपना बदला लेगी बनकर सबका काल।
कुदरत बढ़कर इस दुनिया में ना कोई कमाल।
यही विनाशक क्रोध रूप में यही है दीनदयाल।
ब संभलो और संभालो तुमको ये समझाते हैं।
तुमको ये समझाते हैं।
इस महाविनाश से हम अपनी धरती को बचाते हैं।।

धरती को बचाते हैं।।

चलो मिलकर कदम बढ़ाएं हम पर्यावरण बचाये।।
चलो मिलकर कदम बढ़ाएं हम पर्यावरण बचाये।।

पर्यावरण की रक्षा करने की हम कसम उठाएं।
नदियों और पहाड़ों को हम ना व्यापार बनाएं।
ना हम करें प्रदूषण कोई मानवता अपनाएं।
हम सब जितनी भी हो अपनी सेवा देते जाएं।
जब जब कोई विपदा आए मिलकर हाथ बटाना।
भोजन और चिकित्सा की तुम सेवा करने जाना।
त्याग समर्पण और दया से आगे चले जमाना।
कहे सुनील बात पते की गाय मुकेश तराना।
हम सारे प्रकृति की रक्षा की कसम उठाते हैं।
हां ये कसम उठाते हैं।
इस महाविनाश से हम अपनी धरती को बचाते हैं।।
धरती को बचाते हैं।।

चलो मिलकर कदम बढ़ाएं हम पर्यावरण बचाये।।
चलो मिलकर कदम बढ़ाएं हम पर्यावरण बचाये।।

हम मानवता की खातिर मिलके कदम बढ़ाते हैं।
चलो हाथ बटाते हैं।।
इस महाविनाश से हम अपनी धरती को बचाते हैं।
धरती को बचाते।।

चलो मिलकर कदम बढ़ाएं हम पर्यावरण बचाये।।
चलो मिलकर कदम बढ़ाएं हम पर्यावरण बचाये।।

https://bhaktivandana.com/lyrics/%e0%a4%b9%e0%a4%ae-%e0%a4%aa%e0%a4%b0%e0%a5%8d%e0%a4%af%e0%a4%be%e0%a4%b5%e0%a4%b0%e0%a4%a3-%e0%a4%ac%e0%a4%9a%e0%a4%be%e0%a4%8f%e0%a4%81-by-kumaar-mukesh/